"असाध्यवीणा" भाग-2 (पूर्व से आगे)

वीणा वादक की प्रत्येक गति-विधि का सूक्ष्म निरीक्षण एवं बिम्बात्मक चित्रण कवि की कला का प्रमाण है। यही बात वीणा के तारों से झनझना उठने के क्षण के विषय में सत्य है, -

"सहसा वीणा झनझना उठी
संगीतकार की आँखों में ठंडी पिघली ज्वाला सी झलक गयी
रोमांच एक बिजली सा सबके तन में दौड़ गया
अवतरित हुआ संगीत।

'असाध्य वीणा' मात्र आख्यान कविता नहीं है वह प्रतीक कविता है, कवि उसके द्वारा एक ओर गूढ़ आध्यात्मिक विचारों को व्यक्त करता है तथा दूसरी ओर कला-साधना में सफलता की कुंजी बताता है। अतः उसके प्रतीकों की योजना सोची समझी तथा सुबद्ध है। इसमें वीणा आत्मा का, प्रियंवद सच्चे साधक का, संगीत अखण्ड सत्य का प्रतीक है। कवि बताना चाहता है कि परम ब्रह्म को, अखण्ड सत्य को पाने के लिए पूर्ण श्रद्धा, आस्था, समर्पण भाव, विनम्रता, अहं का लोप आवश्यक है। इस प्रतीक योजना द्वारा ही कवि ने अपनी नवरहस्यवादी आध्यात्मिक भावनाओं को काव्य में ढाला है।

काव्य शिल्प की दृष्टि से भी यह कविता अनूठी है। इसमें वर्णन शैली

Date

विवरण शैली, नाटक की संवाद-शैली तथा दृश्य शैली का मनोहारी सामंजस्य है। प्रकृति के विभिन्न रूपों में चित्रण में विवरण शैली अपनाई गयी है। प्रियंवद के वीणावादन के लिए तत्पर होने और वीणा बजाने से पूर्व उसकी मुद्रा को वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। राजा तथा प्रियंवद के बीच कविता के आरंभ में होनेवाला वार्तालाप नाटक के दृश्य तथा उसके संवादों की तरह है:—

आ गए प्रियंवद! केशकम्बली! गुफा-गेह
राजा ने आसन दिया। कहा:
कृतकृत्य हुआ मैं तात! पुधारे आप।
राजा सके, सांस लम्बी लेकर फिर बोले
तात! प्रियंवद, लो वह सम्मुख रही तुम्हारे
वज्रकीर्ति की वीणा।

केशकम्बली ने गुफा-गेह ने खोला कम्बल
बोला-राजन! पर मैं तो
कलावंत हूँ नहीं, शिष्य, साधक हूँ।

कविता का आरंभ दो नाटकीय ढंग से होता है। जैसे नाटक में पात्र मंच पर प्रवेश करते हैं और उनके बीच वार्तालाप होता है, वैसे ही प्रियंवद आता है, राजा उसे आसन देता है और फिर दोनों के बीच संवाद होता है। नाटक के दृश्यों के तरह ही प्रियंवद द्वारा वीणावादन की तैयारी, तारों को छेड़ने से पूर्व उसका आँखें मूँदना, प्राण खींचना, वीणा पर झुकना, ध्यानमग्न हो जाना सिनेमा या नाटक जैसा दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

'असाध्य वीणा' की भाषा में बोलचाल के सरल शब्द तथा सरल वाक्य रचना भी है तथा संस्कृतनिष्ठ, प्रौढ़ एवं परिवर्तित भाषा भी। भावाभिव्यक्ति को सरल बनाने के लिए देशज शब्दों का प्रयोग

Date

भी किया गया है, जैसे - बहिया (नदी की धारा), झिल्ली, झंका गमक, नहिन की कुनिया की करी मेड़, बरिया पर चमरौधे की सभी चाप। ऐसे प्रसंगों में कवि की लोकजीवन, लोक संगीत तथा लोक ध्वनियों की पहचान का स्पष्ट परिचय मिलता है। क्रियापद एक-एक शब्द के हैं स्थानीय बोलचाल के हैं - डूबे, तरे, छिपे, तू गा, तू सुन आदि जिसके कारण कविता में लय भी आ गयी है तथा भाव भी सरलता से व्यक्त हो जाते हैं। इस प्रकार भाषा प्रयोग की दृष्टि से यह कविता सफल है।

मुक्त छंद में लिखी जाने पर भी कविता की पंक्तियों के आकार में परिवर्तन होने पर भी, कहीं पंक्ति में एक शब्द है तो कहीं दस बारह शब्द। कविता में लय है, संगीत है, प्रवाह है। कहीं कहीं यह भी लगने लगता है कि हम पद्य नहीं गद्य पढ़ रहे हैं। कुछ आलोचकों ने इस पर आक्षेप भी लगाए हैं

1. लम्बी कविता की तरह इसमें तनाव नहीं है।
2. संघर्षपूर्ण स्थिति का अभाव है।
3. कविता को खींचकर लम्बा किया गया है।

सारतः कहा जा सकता है कि 'असाध्य वीणा' भाव तथा शिल्प की दृष्टि से एक सफल कविता है।